

18-महिला जागृति अभियान

अध्याय 1: नारी का परमपूज्य दैवी रूप

प्रश्न 1: लेख में नारी को 'परमपूज्य दैवी रूप' क्यों कहा गया है?

उत्तर: नारी को 'परमपूज्य दैवी रूप' कहा गया है क्योंकि उसी के माध्यम से विधाता ने जीवसृष्टि की संरचना की है। वह माता के रूप में भ्रूण का पोषण करती है, प्रसव-वेदना सहकर उसे जन्म देती है और फिर उसका पालन-पोषण करती है। देव-युग्मों जैसे लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम में भी नारी का नाम पहले आता है, जो देवत्व के प्रतीकों में उसकी प्राथमिकता को दर्शाता है।

प्रश्न 2: मनुष्य के अलावा और किन प्राणियों की उत्पत्ति में नारी तत्व की भूमिका है?

उत्तर: मनुष्य के अतिरिक्त, प्रतिभावान प्राणियों में देव-दानवों की गणना होती है, जिनकी उत्पत्ति दिति और अदिति नामक नारियों से हुई थी। संसार में जो कुछ भी शक्तिशाली, सम्पन्न, ज्ञानी और सुन्दर है, उसकी उत्पत्ति में नारी-तत्व की ही प्रमुख भूमिका मानी गई है। इसी कारण सरस्वती, लक्ष्मी और काली के रूप में उसकी पूजा होती है।

प्रश्न 3: व्यवहार और आत्मिक क्षेत्र में नारी के कौन-से रूप अनुभव किए जाते हैं?

उत्तर: व्यवहार में नारी को तुष्टि, तृप्ति और शान्ति के रूप में अनुभव किया जाता है, जहाँ वह पति, भाई और पुत्र की रुचियों को पूरा करती है। वहीं, आत्मिक क्षेत्र में नारी भक्ति, शक्ति और समृद्धि का प्रतीक है। उसका हर कण सरसता से भरा होता है, जिसे पाकर नर धन्य होता है और अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन कर पाता है।

अध्याय 2: नारी-जीवन के दुर्दिन और दुर्दशा

प्रश्न 1: मध्यकालीन सामन्तवादी युग में नारी की स्थिति में क्या बदलाव आया?

उत्तर: मध्यकालीन सामन्तवादी युग में सब कुछ उलट-पुलट हो गया और नारी की मूल सत्ता को भुला दिया गया। उसे अबला, कामिनी, भोग्या और दासी समझा जाने लगा। उसके प्रति जो पूज्य भाव था, वह कुदृष्टि में बदल गया और उसे तिरस्कृत, शोषित और पददलित होकर दुर्दशाग्रस्त जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ा।

प्रश्न 2: मध्यकाल में नारी पर किस प्रकार के अत्याचार हुए?

उत्तर: मध्यकाल में नारी को मनुष्य और पशु के बीच की इकाई माना गया और उसे घर की चारदीवारी में कैद कर दिया गया। कन्या जन्म को दुर्भाग्य और पुत्र जन्म को सौभाग्य माना जाने लगा, जिससे शिक्षा और दुलार में भेदभाव होता था। ससुराल में उसे केवल एक साधन-सामग्री के रूप में प्रयुक्त किया जाता था।

प्रश्न 3: नर और नारी के लिए अलग-अलग आचार-संहिताएँ क्या थीं?

उत्तर: समाज में नर-नारी के लिए दोहरी आचार-संहिताएँ थीं। स्त्री के लिए पतिव्रत और घूँघट अनिवार्य था, पर पुरुष के लिए पत्नीव्रत या पर्दे का कोई बंधन नहीं था। विधवा पर अनेक प्रतिबन्ध थे, जबकि विधुर कई विवाह कर सकता था। दहेज, सन्तान न होना और रूप-सौन्दर्य के आधार पर भी नारी को पग-पग पर सताया जाता था।

प्रश्न 4: नारी को 'पक्षाघात-पीड़ित' की तरह अपंग क्यों कहा गया है?

उत्तर: आधी जनसंख्या यानी नारी शक्ति को जब प्रगति के अवसरों से वंचित कर दिया जाता है, तो वह पक्षाघात-पीड़ित की तरह अपंग और असहाय हो जाती है। उसे दबाने की नीति के कारण पुरुष को भी उसका

भार उठाना पड़ता है, जिससे समाज की प्रगति रुक जाती है। इस पिछड़ेपन से नर और नारी दोनों ही शून्य जैसी दयनीय स्थिति में पहुँच जाते हैं।

अध्याय 3: परिवर्तन का तूफानी प्रवाह

प्रश्न 1: लेख में 'उलटे को उलटकर सीधा करने' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: 'उलटे को उलटकर सीधा करने' का तात्पर्य यह है कि स्रष्टा या प्रकृति अन्याय और असंतुलन को लंबे समय तक सहन नहीं करती। जब-जब अनीति और अत्याचार बढ़ते हैं, तब प्रकृति अपनी व्यवस्था से उसे सुधारती है। सामन्तवाद और दास-प्रथा का अंत इसी परिवर्तन का प्रमाण है, जो दर्शाता है कि अन्याय हमेशा स्थिर नहीं रह सकता।

प्रश्न 2: इक्कीसवीं सदी को 'नारी सदी' क्यों कहा जा रहा है?

उत्तर: इक्कीसवीं सदी को 'नारी सदी' कहा जा रहा है क्योंकि यह महापरिवर्तनों का समय है, जिसमें नारी का खोया हुआ सम्मान और वर्चस्व उसे वापस मिलेगा। वह स्वयं अवांछनीय बंधनों से मुक्त होगी और विश्व मंच पर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह परिवर्तन केवल मानवीय पुरुषार्थ नहीं, बल्कि दैवी चेतना द्वारा भी संचालित है।

प्रश्न 3: प्राचीन काल की किन नारीरत्नों का उदाहरण देकर भविष्य के लिए आशा व्यक्त की गई है?

उत्तर: प्राचीन नारीरत्नों जैसे कुन्ती, मदालसा, गंगा, सीता, शकुन्तला, और अनुसूया का उदाहरण दिया गया है, जिन्होंने महान पुत्रों को जन्म दिया और उनका निर्माण किया। साथ ही, अरुन्धती जैसी ऋषिकाओं ने अपने पतियों की तपस्या में सहयोग दिया। इन उदाहरणों से यह आशा बलवती होती है कि भविष्य में भी नारी अपनी महान भूमिका निभाएगी।

अध्याय 4: नई शताब्दी—नारी शताब्दी

प्रश्न 1: विदेशों में नारी प्रगति के कुछ उदाहरण क्या हैं?

उत्तर: विदेशों में नारी ने उन सभी क्षेत्रों में प्रवेश किया है जहाँ पुरुष कार्यरत रहे हैं। उदाहरण के लिए, मैडम क्यूरी ने वैज्ञानिक अनुसंधान किए, फ्लोरेन्स नाइटिंगेल ने रेडक्रॉस आंदोलन चलाया, और मदर टेरेसा ने गरीबों की सेवा की। राजनीति में इंदिरा गाँधी, गोल्डामायर और बेनजीर भुट्टो जैसी महिलाओं ने अपने देशों का नेतृत्व किया।

प्रश्न 2: भारत के केरल राज्य में नारी प्रगति के क्या परिणाम देखने को मिले हैं?

उत्तर: केरल में लड़कियों ने शिक्षा के क्षेत्र में असाधारण प्रगति की है, जिससे वे ग्रेजुएट होने तक पढ़ाई नहीं छोड़तीं। उनके प्रयासों से विवाह की आयु बढ़ाई गई, जिससे जनसंख्या वृद्धि रुकी। शिक्षित महिलाओं ने देश-विदेश में आजीविका पाई और प्रदेश की समृद्धि बढ़ी। इन सबमें नारी समाज के उत्साह की प्रमुख भूमिका रही है।

अध्याय 5: भारत अग्रणी था—अग्रणी रहेगा

प्रश्न 1: भारत में नारी की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं में क्या अंतर है?

उत्तर: प्राचीन भारत में संघमित्रा और आम्रपाली जैसी नारियाँ विश्व कल्याण के लिए समर्पित थीं, लेकिन आज भी देहाती क्षेत्रों में नारी शिक्षा और सामाजिक स्थिति में पिछड़ी हुई है। फिर भी, समय बदल रहा है। पंचायती राज में महिलाओं को 30% आरक्षण दिया गया है, जो यह संकेत है कि उनकी उपयोगिता समझी जाने लगी है और उन्हें सम्मान मिल रहा है।

प्रश्न 2: नारी के नवजीवन का 'स्वर्णिम काल' आने का क्या अर्थ है?

उत्तर: नारी के नवजीवन के 'स्वर्णिम काल' का अर्थ है कि वह स्वाभाविक रूप से अधिक समर्थ, कुशल और सुसंस्कृत बनने जा रही है। जैसे वसंत में फूल खिलते हैं और प्रभात में अंधकार मिटता है, वैसे ही नारी युग की अधिष्ठात्री के रूप में अपनी गरिमा पुनः प्राप्त करेगी। यह परिवर्तन नियति द्वारा निर्धारित है और इसे रोका नहीं जा सकता।

प्रश्न 3: नारी उत्थान के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: यद्यपि नारी उत्थान नियति द्वारा तय है, फिर भी इसके लिए पुरुषार्थ आवश्यक है। जैसे बुद्ध और गाँधी को विश्व-कल्याण के लिए तथा हनुमान और अर्जुन को अपने लक्ष्य के लिए प्रयत्न करना पड़ा, उसी प्रकार नारी को भी अपने उत्थान के लिए प्रयास करना होगा। प्रत्यक्ष रूप से शिक्षा, स्वावलम्बन जैसे क्षेत्रों में उसे सहयोग की आवश्यकता है।

अध्याय 6: ये बन्धन अब टूटने ही चाहिए

प्रश्न 1: नारी के प्रति समाज में कौन-सी गलत मान्यताएँ जड़ पकड़ गई हैं?

उत्तर: समाज में नारी के प्रति अनेक गलत मान्यताएँ हैं। अभिभावक उसे 'पराये घर का कूड़ा' मानकर उपेक्षा करते हैं। पति उसे कामुकता पूर्ति का साधन समझता है और ससुराल वाले उसे बिना किसी अधिकार वाली दासी मानते हैं। इन्हीं हेय मानसिकताओं ने उसकी प्रतिभा और वरिष्ठता का अपहरण कर लिया है।

प्रश्न 2: नारी अधिकारों के लिए कानूनी और सामाजिक स्तर पर क्या बदलाव आ रहे हैं?

उत्तर: नारी को उसके अधिकार दिलाने के लिए कानूनी बदलाव शुरू हो गए हैं, जैसे पंचायत चुनाव में 30% स्थान सुरक्षित करना। इससे यह संकेत मिलता है कि समाज में उसे उचित न्याय मिलने की संभावना बढ़ रही है। इस बदलाव ने नर और नारी, दोनों को प्रभावित किया है और नारियों को अधिक सुयोग्य बनाने के प्रयास चल पड़े हैं।

अध्याय 7: समय की नब्ज़ पहचानी जाए

प्रश्न 1: लेख के अनुसार "नर और नारी एक समान" के उद्घोष का क्या महत्व है?

उत्तर: "नर और नारी एक समान" का उद्घोष युगचेतना का लक्ष्य है। इसका महत्व यह है कि अब नारी को असहाय और अनुचित दबाव में नहीं रखा जा सकता। कन्या जन्म पर विलाप और पुत्र जन्म पर बधाई जैसी भेदभावपूर्ण प्रथाएँ समाप्त होनी चाहिए। शिक्षा और व्यवस्था में पुरुष का एकाधिकार खत्म होगा और नारी को हर क्षेत्र में समान अवसर मिलेंगे।

प्रश्न 2: पर्दा-प्रथा और बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं के क्या दुष्परिणाम बताए गए हैं?

उत्तर: पर्दा-प्रथा नारी को असहाय, अनुभवहीन और दूसरों पर आश्रित बनाती है, जिससे वह अपनी रक्षा करने की हिम्मत भी खो देती है। बाल-विवाह उसे शिक्षा और योग्यता बढ़ाने के अवसरों से वंचित कर देता है। विवाह के बाद प्रगति के रास्ते बंद हो जाने से वह एक कैदी जैसा जीवन जीने को विवश हो जाती है, जिससे उसका शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी बिगड़ जाता है।

अध्याय 8: दाम्पत्य की गरिमा भुलाई न जाए

प्रश्न 1: एक पति का अपनी पत्नी के प्रति सहज उत्तरदायित्व क्या होना चाहिए?

उत्तर: विवाह के बाद पति का यह सहज उत्तरदायित्व है कि वह पत्नी को कम-से-कम अपनी योग्यता के स्तर तक पहुँचाने का पूरा प्रयास करे। यदि वह ऐसा नहीं करता तो उसका विवाह अपहरण के समान है। उसे पत्नी के स्वास्थ्य और बच्चों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए कामुकता पर नियंत्रण रखना चाहिए और परिवार की जिम्मेदारियों को समझना चाहिए।

प्रश्न 2: लेखक के अनुसार विवाह का सही समय और उद्देश्य क्या होना चाहिए?

उत्तर: विवाह तब होना चाहिए जब दोनों साथी एक-दूसरे को आगे बढ़ाने के लिए सहमत हों। इसका उद्देश्य केवल संतानोत्पत्ति नहीं, बल्कि एक-दूसरे का आजीवन सहयोग करना होना चाहिए। लेखक के अनुसार, पति-पत्नी को एक-दूसरे की प्रगति के लिए समर्पित रहना चाहिए, क्योंकि यही मानवीय गरिमा को शोभा देता है।

प्रश्न 3: स्वच्छंद यौनाचार को सबसे बड़ी बाधा क्यों माना गया है?

उत्तर: स्वच्छंद यौनाचार को सबसे बड़ी बाधा माना गया है क्योंकि यह पति-पत्नी दोनों को शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार बनाता है। अश्लील चिंतन मानसिक क्षमताओं का नाश करता है और व्यक्ति को उच्चस्तरीय सोच से रोकता है। यह नारी के प्रति पूज्य भाव को भी नष्ट करता है, जिससे उसका उत्कर्ष रुक जाता है।

अध्याय 9: दुश्चिन्तन हटाएँ—सृजन अपनाएँ

प्रश्न 1: नर-नारी के बीच कैसा रिश्ता होना चाहिए और इससे क्या लाभ होगा?

उत्तर: नर-नारी के बीच भाई-बहन जैसा सहयोगी रिश्ता होना चाहिए, जिसमें अश्लीलता की कोई जगह न हो। इससे आत्मीयता, आदर्शवादिता और सेवा-भावना का विकास होगा। इस रिश्ते से वे अपनी क्षमताओं को बचाकर लोकहित के कार्यों में लगा सकते हैं, जिसकी नवयुग के निर्माण में बहुत आवश्यकता है।

प्रश्न 2: परिवार में रहते हुए भी महिलाएँ प्रगति के लिए क्या कर सकती हैं?

उत्तर: व्यस्त और प्रतिबंधित महिलाएँ भी अपनी शिक्षा और योग्यता बढ़ा सकती हैं। वे अपने परिवार में श्रमशीलता, मितव्ययिता, शिष्टता और सहकारिता जैसे सद्गुणों का विकास कर सकती हैं। साथ ही, वे अपने छोटे से क्षेत्र से कुरीतियों और गलत मान्यताओं को खत्म करने का प्रयास भी कर सकती हैं।

अध्याय 10: दो बड़े कदम—शिक्षा और स्वावलम्बन

प्रश्न 1: नारी उत्थान के लिए शिक्षा क्यों आवश्यक है और इसकी व्यवस्था कैसे की जा सकती है?

उत्तर: नारी उत्थान के लिए शिक्षा सर्वप्रथम आवश्यकता है क्योंकि इसी से प्रगति के द्वार खुलते हैं। इसकी व्यवस्था के लिए शिक्षित महिलाओं को अपने समीपवर्ती क्षेत्रों में प्रौढ़-पाठशालाएँ चलानी चाहिए। अक्षरज्ञान के बाद उन्हें व्यक्तित्व और परिवार को बेहतर बनाने वाली सरल पुस्तकें उपलब्ध करानी चाहिए, जिसके लिए महिला-पुस्तकालय भी खोले जा सकते हैं।

प्रश्न 2: स्वावलम्बन को नारी के लिए दूसरा महत्वपूर्ण कदम क्यों बताया गया है?

उत्तर: स्वावलम्बन महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी से नारी को आर्थिक स्वतंत्रता मिलती है और परावलम्बन का दबाव खत्म होता है। गृहकार्यों के अलावा जब वह कुछ कमाई करती है, तो समाज में उसका मूल्य बढ़ता है। इसके लिए सहकारिता के आधार पर कुटीर उद्योग चलाए जा सकते हैं, जिससे उसे अपनी इच्छा के अनुसार प्रगति के लिए साधन जुटाने का अवसर मिलता है।

अध्याय 11: नारी-अवमूल्यन को रोका जाए

प्रश्न 1: बच्चों के पालन-पोषण में पिता की भागीदारी क्यों जरूरी है?

उत्तर: बच्चों के पालन-पोषण में पिता की भागीदारी इसलिए जरूरी है ताकि यह जिम्मेदारी केवल नारी पर न रहे। स्वीडन सरकार ने यह नियम बनाया है कि पुरुषों को भी बच्चों की देखभाल के लिए छुट्टी लेनी होगी। संतानोत्पत्ति में पुरुष भी बराबर का भागीदार होता है, इसलिए उसे भी इसके परिणामों और जिम्मेदारियों में सहभागी होना चाहिए।

प्रश्न 2: पुरुष वर्ग को नारी के प्रति समय रहते न्यायपूर्ण व्यवहार क्यों अपनाना चाहिए?

उत्तर: पुरुष वर्ग को समय रहते न्यायपूर्ण व्यवहार अपनाना चाहिए क्योंकि समता और एकता का परिवर्तन अटल है। यदि वे स्वेच्छा से यह बदलाव स्वीकार करते हैं, तो दोनों पक्षों का लाभ होगा। टकराव की स्थिति में समाज को अधिक घाटा उठाना पड़ सकता है, जैसा कि कई राजनीतिक और सामाजिक क्रांतियों में हुआ है।

प्रश्न 3: पाश्चात्य नारी-मुक्ति आंदोलन और भारत में अपेक्षित आंदोलन में क्या अंतर है?

उत्तर: पाश्चात्य देशों में नारी-मुक्ति आंदोलन संघर्ष और प्रतिशोध के कटुता भरे वातावरण में उभर रहा है। इसके विपरीत, भारत में यह आंदोलन अहिंसक सत्याग्रह की तरह उभरना चाहिए, जिसमें टकराव की जगह समझौतावादी उदारता हो। इसका उद्देश्य केवल भ्रांतियों को दूर कर सहयोग और सद्भावना का वातावरण बनाना होना चाहिए।

अध्याय 12: एकता और समता का सुयोग बने

प्रश्न 1: पति-पत्नी के बीच कैसा संबंध होना चाहिए?

उत्तर: पति और पत्नी में कोई स्वामी या दास नहीं है; उनका संबंध भाई-भाई या बहन-बहन की तरह सद्भावना और सहकारिता पर आधारित होना चाहिए। सच्ची मित्रता इसी आधार पर फलती-फूलती है कि व्यक्ति अपने लाभ से अधिक अपने साथी के हित का ध्यान रखे। इस छोटे से बदलाव से पारिवारिक और सामाजिक स्थिति में बहुत बड़ा सुधार आ सकता है।

प्रश्न 2: युगसंध्या की वेला में प्रजनन-कृत्य पर रोक लगाने का आग्रह क्यों किया गया है?

उत्तर: युगसंध्या (एक युग के अंत और दूसरे के आरंभ का समय) की वेला में प्रजनन पर रोक का आग्रह किया गया है क्योंकि यह समय नारी के पुनरुत्थान के लिए व्रत करने का है। इस समय में अनावश्यक जिम्मेदारियों में उलझने से प्रगति का मुख्य कार्य बाधित होगा। साथ ही, आज जनसंख्या वृद्धि संसार का प्रमुख संकट है, जिसे रोकना आवश्यक है।

अध्याय 13: प्रजनन पर तो रोक लगे ही

प्रश्न 1: प्रजनन पर रोक लगाने के मुख्य कारण क्या बताए गए हैं?

उत्तर: प्रजनन पर रोक लगाने के चार मुख्य कारण हैं:

1. **युगसंधि का प्रभाव:** बीसवीं सदी के अंतकाल के सूक्ष्मजगत के उलझाव का दुष्प्रभाव होने वाली संतान पर पड़ सकता है।
2. **युग-धर्म:** यह समय नारी-पुनरुत्थान के लिए समर्पित होने का है।
3. **जनसंख्या संकट:** बढ़ती जनसंख्या एक विनाशकारी संकट है, जिसे रोकना आवश्यक है।
4. **अवकाश की प्राप्ति:** इससे नारी-कल्याण के लिए आवश्यक समय और अवसर मिलेगा।